॥ श्री ॥

उदट रै इतिहास में कांपलिया चौहाणां री भूमिका

एक ऐतिहासिक, सौर्य अर भाईचारे री अमर गाथा

उदट रै इतिहास में कांपलिया चौहाणां री भूमिका घणी कोडवाळी (गौरवमयी), त्याग अर जीवण-मरण री सांझ (भाईचारे) री ओक अनूठड़ी मिसाल है। राजा-महाराजावां रै बखत सूं लै'र आज तक, इण धरती रै सामाजिक, सांकृतिक अर प्रगतिक ढांचा नै थामण में कांपलिया चौहाणां रो हिताऊ जोगदान अतोळ रह्यो है। अठै मिळ्या जूना साख्यां अर पीढ़ियां री बातां रै आधार माथै उणां रो कड़वार इतिहास इण भांत है:

१. पूरब प्रसंग (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)

रियासत रै समै ईडर अर सांचौर री कंकड़ (सीमा) माथै गढ़कांपला नांव रो ओक मोटो अर नामी ठिताणो (जागीर) हुय करतो हो।

- **मूल पुरख अर सगाई-सम्बन्धः** राव मल्लीनाथ जी / मालदे जी रै बखत कुंभा जी कांपलिया कांपला गढ़ में रेवता हा। कुंभा जी कांपलिया रो ब्याव सलखा जी रै सुपुत्र अर मालदे जी रै छोटा भाई जैतमाल जी री धीया (पुत्री) सागे हुयो हो।

२. खांडै री धार माथै बलिदान अर 'रिण भाई' री रीत

उदट रै इतिहास में ओक मोटो फेरबदल जदि आयो, जदि उदट री कोटड़ी (ठिकाणै) में धनजी अर रिधजी री कोटड़ियां रै बिचै आपस रो हक अर गढपत नै लै'र राड़ (लड़ाई-झगड़ो) छिड़गी।

- **वरतो मोटो बलिदानः** इण विखै (संकट) रै समै कांपलिया चौहाणां न्याय अर अपणी साख री मरजाद राखण सारु धनजी रो पख (पक्ष) लियो अर हथियार उठा लिया। इण भारी राड़ में धनजी कानी सूं जूझता-जूझता ओक कांपलिया चौहान वीरगति नै वरण कीवी (काम आग्या)।
- **रिण भाई री मरजादः** जुध रै मैदान में सागे लोही (रक्त) बहाबण अर बैरी सागे लोहा लेबण सूं कांपलिया चौहान अर रूपावत राठौड़ आपस में 'रिण भाई' (रण रा भाई) बणग्या। इण बात नै लै'र आज दिन तक कांपलिया चौहान उण नख रा रूपावतां सागे कदैई नातो-ब्याव (वैवाहिक सम्बन्ध) कोनी करै, क्यूंके वे उणां नै अपणा सगा भाई मानै है। इण रीत-कथनी नै आज भी पूरी सुचिता अर नेम सागे पाळीजै।

३. उदट कोटड़ी में मान-मंरजाद अर हक

कांपलिया चौहाणां रै इण अतोळ अर निस्वारथ बलिदान सूं राजी होय'र, जदि रूपावतां रो आपस में समझोतो हुयो, तदि उणां कांपलिया चौहाणां नै उदट में रूपावतां रै बिलकुल बरोबर रो हक अर अगत्यार (अधिकार) दीधो:

- गाम रा सगळा सूं मोभी (मुख्य) अर उपजाऊ हळी-खेत मान-सनमान सागे कांपलिया चौहाणां नै सुंपीज्या।
- उणां रै इण त्याग रै आदर में उणां रा खेतां माथै कदैई कोई हाली-लाग (लगान/कर) कोनी लीजो गयो, जो रियासत बखत में घणो मोटो सनमान हो।
- उदट कोटड़ी रा सगळा ई कार-बार, पंचायती अर नीत-नीम रा कामां में सदा कांपलिया चौहान ही धणी-धोरी (कर्ताधर्ता) रैया।

४. वंसावळी अर गाम रा मोभी पुरख

उदट में कांपलिया चौहाणां री वंस-बेल नै आगै बधाबण वाळा दो गढ-थंभ हा लख जी कांपलिया अर कलजी कांपलिया। इणां दोणूं भाईयां री वंसावळी इण रीत चाली:

अ) लख जी कांपलिया रो वंस (खीचन गाम गमन अर पाछो आवण)

- लख जी रै ओक बेटा हुया - राम सिंह जी।
- राम सिंह जी रो ब्याव खीचन गाम रै 'भीड़कमल भाटी' परां (परिवार) में हुयो हो। राम सिंह जी रै देवलोक हुवण पैली, उणां री पट्टराणी अर उणां रा दो टाबर - अनोप सिंह अर नग सिंह- अपणै ननिहाल खीचन जाय'र बसग्या।
- आगे चलकर खीचन गाम में ही अनोप सिंह जी रै ४ बेटा हुया अर वे बठै ही रेवण लागा।
- पण, वो परवार भलेई खीचन गयो हो, तोई उदट में उणां री बाप-दादई जमीन, घर-बाखळ अर माल-मत्ता ज्यूं री त्यूं रैई। वे समै-समै माथै उदट आवता, अपणी गिड़ाई (खेती) करता अर रैता ई हा।
- पाछै सूं, अनोप सिंह जी रा बेटा मालम सिंह जी वापस अपणै मूंढ-वतन उदट आ'र बसग्या। उणां री ओलाद अर वंसज आज भी उट्ट में घणै सनमान सागे रैवे है।

ब) कलजी कांपलिया रो वंस (दादो धूड़जी)

- कलजी रै ओक बेटा हुया - धूहड़ सिंह जी।
- धूहड़ सिंह जी अपणै समै रा घणा कोडवाळा, न्यायी अर मोभी पंच हुया। सगळा गाम का कबीला उणां नै घणै हेत सूं 'दादो' कै'र बाजता या 'धूड़जी दादो' कैवता। उणां री पंचायती अर आखर ऐड़ा हा के गाम रो हर मानवी उणां री बात नै ई सैं सूं मोटो न्याय मानतो।
- पण करम री गत ऐड़ी रैई के उणां री कोई ओलाद पाछे कोनी बची (कोई-कोई जुणी कैवै है के उणां रै ओक बेटो हुयो हो, पण वो छोटी उमर में ई सांत / देवलोक हुय गयो हो)।

परमाण-नचोड़ (निष्कर्ष):

उदट रै इतिहास रै पानां माथै कांपलिया चौहाणां रो नांव ओक ऐड़ै खुददार, सूरवीर अर सतवाळी कौम रै रूप में लिख्योड़ो है, जिण विखै रै समै अपणो लोही बहाय'र भाईचारे री अमर साख बणाई। आज भी उदट री इण धरत-धौरां माथै उणां रो आदर, उणां री जागीर-जमीन अर उणां रो उजळो इतिहास जगमगावै है।